शताक्षी

आद्याशक्ति महामाया देवी दुर्गा का एक नाम हैं। एकबार शतवर्ष व्यापी अनावृष्टि के फलस्वरूप जगत् जलशून्य हो जाने से ऋषि-मुनिगणों की प्रार्थना सुनकर देवी आद्याशक्ति अयोनिज रूप में उत्पन्न हुई थी। तब उन्होंने शतनेत्रों द्वारा मुनिगण को अवलोकन किया था। इस कारण से मुनि व अन्य मानवों ने देवी को 'शताक्षी' नाम से अभिहित किया था।

एकबार 'दुर्गम' नामक असुर, देवगण को परास्त कर उन्हें वशीभूत करने के उद्देश्य से ब्रह्मा की आराधना में मग्न हुआ। उसकी तपस्या से संतुष्ट होकर ब्रह्माजी के उन्हें वर देने के लिए उपस्थित होने पर दुर्गम ने ब्रह्मा से समुदय वेद की याचना की एवं जिस उपाय से वह सारे देवगण को पराजित कर सके, ऐसे बल के लिए प्रार्थना की। दुर्गम असुर के समग्र वेदों के अधीश्वर होने पर पृथ्वी से वेद विलुप्त हो गये एवं तत्संग वेदाचार मूलक समुदय क्रिया-कर्मादि भी लुप्त हो गये। याग-यज्ञादि सब बंद हो जाने से एवं इसके फलस्वरूप अग्नि में घृताहुति के अभाव वशत:तब जगत में वर्षा का भी अभाव हो गया। शतवर्ष व्यापी ऐसी अनावृष्टि होने से सम्पूर्ण प्राणीगण अकाल काल-कवलित होने लगे। यह देखकर ब्राह्मणगण हिमालय के पार्श्व प्रदेश में जाकर देवी शिवानी का स्तव करने लगे। उन सब के स्तव से संतुष्ट होकर देवी निज अद्भूत रूप में उनके निकट आविर्भूत हुई। वह चतुर्हस्ता देवी दक्षिण भुजद्वय में शरमुष्टि व कमल एवं वाम भुजद्वय में क्षुधा-तृष्णादि नाशक पुष्प-पल्लव-फलमूलादि एवं महाशरासन धारण किए हुई थीं। देवी अनन्त नेत्रा होकर आविर्भूत हुई थी! उनके अनन्त नेत्र समुदय से नौ दिवस व्यापी निरन्तर वर्षण होने लगी एवं नद-नदी समुह पुन: प्रवाहित होने लगे। देवी के आविर्भाव के पूर्व जो देवगण दुर्गम असुर के भय से गिरिगुहादि मध्य छिपे हुए थे, देवी की कृपा वर्षण से वे सब पुनराय वहिर्गत होकर तब देवी का स्तव करने लगे एवं देवी को 'शताक्षी' नाम से अभिवादन-वंदन किए थे।

(*'देवी भागवतम्' से संगृहीत कथा*)

हिन्दी अनुवाद–मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख